अब सिर्फ शोपीस नहीं रहीं कंगना राणावत

बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना राणावत ने धीरे-धीरे बॉलीवुड में अपनी जगह बना ली है। पहले सिर्फ फिल्मों में शोपीस समझे जाने वाली कंगना के अभिनय की आज हर जगह तारीफ होती है। उन्होंने भले ही फिल्मों में स्थापित होने के लिए अंग प्रदर्शन का सहारा लिया हो लेकिन अभिनय पर भी उन्होंने पूरा ध्यान दिया। यही कारण है कि 'तनु वेड्स मनु' जैसी साफ सुथरी फिल्म में भी दर्शकों ने उन्हें उतना ही पसंद किया जितना उन्हें फिल्म 'गैंगस्टर' की ग्लैमरस भूमिका में किया था। कंगना के बारे में कहा जा रहा है कि वह जल्द ही निर्देशक अनुराग बसु की अगली फिल्म में 'मधुबाला' के रोल में नजर आएंगी। यह फिल्म संगीतकार और अभिनेता किशोर कुमार के जीवन पर आधारित है।

अनुराग बसु से हालांकि कुछ समय पहले तक कंगना का छत्तीस का आंकड़ा चल रहा था लेकिन अब बताया जा रहा है कि दोनों ने पुरानी बातों को भुला कर आगे फिर साथ काम करने का निर्णय किया है। बसु और कंगना की दोस्ती वैसे तो काफी पुरानी है और बसु ही वह निर्देशक थे जिन्होंने सबसे पहले कंगना को फिल्मों में काम दिया। कंगना की पहली फिल्म गैंगस्टर थी। इस फिल्म के दौरान से ही कंगना और बसु की अच्छी ट्यूनिंग हो गई थी लेकिन राकेश रोशन के बैनर की फिल्म 'काइट्स' के निर्माण के दौरान दोनों के रिश्तों में कुछ खटास आ गई थी। कंगना इस बात से नाराज थीं कि बसु ने इस फिल्म में उनका रोल छोटा और महत्वहीन कर दिया था।

कंगना ने पिछले वर्ष 'वन्स अपान ए टाइम इन मुंबई' जैसी सफल फिल्म दी तो इस साल अब तक प्रदर्शित फिल्मों में सर्वाधिक बड़ी हिट उनकी ही फिल्म 'तनु वेड्स मनु' रही। अपनी चेहरे पर सदा मुस्कान लिए रहने वाली कंगना का विवादों से भी वास्ता रहा है। आदित्य पंचोली के साथ विवाद रहा हो या फिर पार्टियों में उनके व्यवहार को लेकर होने वाले गॉसिप, कंगना हमेशा मीडिया की सुर्खियों में रही हैं।

फिल्मों में आने से पहले कंगना थियेटर से जुड़ी हुई थीं और उन्होंने १८ वर्ष की होने से पहले ही बॉलीवुड में कदम रख दिया था। बॉलीवुड में पहली ही फिल्म के बाद कंगना की बोल्डनेस की इतनी चर्चा हुई कि वह एकाएक पत्रिकाओं की मुखपृष्ठ पर छा गईं। फिल्म 'फैशन' के जरिए तो उन्होंने अपने फैन्स का एक बहुत बड़ा वर्ग तैयार कर लिया। इस फिल्म में उनके काम को देखते हुए उन्हें सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री श्रेणी में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से भी नवाजा गया।

पिछले साल आई कंगना की दो फिल्में 'नो प्राब्लम' और 'नाकआउट' भले ही चल नहीं पाईं लेकिन इन दोनों ही फिल्मों में कंगना के काम को सभी ने सराहा। कंगना को कम समय में मिले ढेरों पुरस्कार उनकी काबलियत को साबित करते हैं। उन्हें अपनी पहली ही फिल्म में अपने अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का एशियन फेस्टिवल और फर्स्ट फिल्म पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ नवोदित अभिनेत्री का फिल्मफेयर पुरस्कार, फिल्मफेयर फेयरएवर फ्रेश फेस आफ द ईयर अवार्ड, सर्वश्रेष्ठ नवोदित अभिनेत्री का आइफा अवार्ड, मोस्ट प्रोमिसिंग न्यूकमर श्रेणी का स्टार स्क्रीन अवार्ड, सर्वश्रेष्ठ नवोदित अभिनेत्री श्रेणी में जी सिने अवार्ड, स्टारडस्ट सुपरस्टार आफ टुमौरो अवार्ड, सर्वश्रेष्ठ नवोदित अभिनेत्री का बॉलीवुड मूवी अवार्ड तथा २००८ में फिल्म 'लाइफ इन ए मेट्रो' में अपने अभिनय के लिए स्टारडस्ट अवार्ड मिला। इसके साथ ही २००९ में उन्होंने फिल्म 'फैशन' के जरिए सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता। इसी श्रेणी में उन्हें इस रोल के लिए फिल्मफेयर और आइफा, स्टारडस्ट तथा अप्सरा अवार्ड भी मिले।

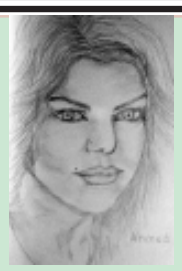

लघुकथाएं

मक़सद

आंटी के बुलावे पर नरगिस को अचंभा हुआ। उसने तो कब का धंधा छोड़ दिया था। जिस बीमारी से वह जूझ रही थी उसके बाद धंधा चालू रखना मुमकिन न था। लेकिन आंटी के बुलावे को नरगिस नज़रअंदाज भी नहीं कर सकती थी। बीमारी ने उसे थोड़ा कमज़ोर कर दिया था... कभी उसके नाम की तूती बोलती थी बाज़ार में.... उसकी खूबसूरती पर न जाने कितने मरते थे और एक रात की को कीमत भी देने के लोग तयार हो जाते थे.... आंटी ऐसे लोगों से निपटने में माहिर थीं.... नरगिस तो उनके खज़ाने की सबसे क़ीमती हीरा थी जिसका आंटी ख़ास खराल रखतीं....

नरगिस यही सब कुछ सोचती आंटी के पास पहुंची तो वहां को नहीं था.....आंटी ने नरगिस को बाहों में भर लिया.....'अच्छा हुआ तू आ गई'

'तूने बुला भेजा था तो आना ही था.....कोई खास वजह' नरगिस ने कहा। 'हां तुझे फिर से धंधे पर लगाना है' आंटी की आंखों में एक अजब तरह की चमक थी....ऐसी चमक पहली बार नरगिस ने देखी थी आंटी की आंखों में। 'लेकिन आंटी.....'

'हां मैं जानती हूं तेरे को खराब बीमारी है लेकिन तू घबरा मत... तेरे से समाज और देश की सेवा करवानी है' आंटी ने बीच में ही नरगिस की बात काट डाली। 'देश सेवा' नरगिस ने हैरानी से पूछा।

'हां देश सेवा...तेरी बीमारी को हथियार बनाना है मुझे' आंटी ने कहा लेकिन नरगिस की समझ में कुछ नहीं आया। 'नहीं समझी.....देख हम तो ठहरे धंधे वाले....हमारी जिंदगी में उजाले की कोई नन्ही सी किरण भी नहीं है..... लेकिन हमारे जिस्म का इस्तेमाल नेताओं, अफ़सरों और सेठों को खुश करने के लिए किया जाता है..... रो वे हैं जो देश को लूट रहे हैं.... हम लोग क्या जानें काला धन...सफेद धन.... लेकिन देख करोड़ों लूट रहे हैं नेता-अफसर-ठेकेदार..... समाज और देश की चिंता किसी को नहीं है..... दूसरी तरफ पुलिस है जो अपराधियों को तो छोड़ देती है लेकिन मासूम और बेगुनाहों को मारने में सेकंड का भी देर नहीं लगाती..... तू तो जानती ही है कि हम लोगों को भी कम परेशान नहीं करते हैं रो पुलिस वाले..... याद है न तुझे तेरे भाई को भी इन पुलिस वालों ने मार डाला था और उसका क़सूर बस इतना था कि उसने इस बात का विरोध किया था कि वे तुझे जबर्दस्ती उठा कर ले जा रहे थे.... सोनिया....शबनम...जूली...भी इनकी हवस की भेंट चढ़ गई हैं....समाज में राह गंदगी फैला रहे हैं, इनसे ही निपटना है हमें.... लेकिन हम ठहरे कमज़ोर और लाचार... कैसे निपटें तो मुझे तेरा ख्याल आया..... तेरा जिस्म ही इनके खिलाफ बड़ा हथियार है.... तुझे एड्स है...यह बात मुझे पता है इन नेताओं-अफ़सरों-पुलिसवालों को नहीं.... आज के बाद तू उन लोगों के पास जाएगी जिन्होंने देश और समाज का बंटाधार किया है....'

आंटी की आंखों की कौंधती चमक अब नरगिस की आंखों में कौंध रही थी... उसे अब जीने का एक मकसद मिल गया था।

फ़रियाद

माई को जब पता चला कि नई आई लड़की मां बनने वाली है तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा.....माई ने उसकी बलइयां लीं और दूसरी लड़कियों से साफ कह दिया उसका पूरा ख्याल रखा जाए...उस नई लड़की का अब पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता... उसके खाने-पीने से लेकर दूसरी छोटी-छोटी बातों का भी.... आखिर लंबे अरसे के बाद वहां को लड़की मां बनने जा रही है.....। कुछ दिन बीते तो माई उस नई लड़की को डॉक्टर के पास ले गई..... डॉक्टर ने लड़की की जांच कर माई को तसल्ली दी...'सब कुछ ठीक है'। माई के चेहरे पर सुख फैल गया....लेकिन अचानक माई को कोख में पलने वाले बच्चे की जानकारी हासिल करने का मन हुआ.... उन्होंने डॉक्टर से कहा 'इस बच्चे की जानकारी दें, प्लीज.... बेटा है या बेटी'। डॉक्टर ने उन्हें टालना चाहा लेकिन मा अड़ गई । तब डॉक्टर ने लड़की के कोख में पलने वाले बच्चे की जानकारी के लिए परीक्षण किया। जांच के बाद डॉक्टर ने माई से कहा 'मुबारक हो, लड़का है'। डॉक्टर की बात सुन कर माई सन्न रह गई ... 'क्या कहा लडका?'

च्हांज् डॉक्टर ने कहा।

'डॉक्टर हमें यह लड़का नहीं चाहि' उसने हाथ जोड़ दिए। 'लेकिन क्यों' डॉक्टर हैरान थीं.....'यहां तो लोग लड़कियों को पैदा होने से पहले ही कोख में मार देते हैं और तुम लड़के को मारने को कह रही हो'। 'हां, डॉक्टर...हमें लड़का नहीं लड़की चाहिए...' माई ने कहा। 'ऐसे क्यों'

'डॉक्टर, आप नहीं समझेंगी बेटियां हमारे लिए कितनी जरूरी होती हैं.... बेटे हमारे लिए बोझ होते हैं डॉक्टर... मेरी बच्ची उस बच्चे को नहीं जनेगी डॉक्टर.... हम वेश्या जो ठहरे....'।

माई की आंखों में प्रार्थना थी और डॉक्टर की आंखों में हैरत।

शोक

पूरी बस्ती आज अंधेरे में डूबी थी....ऐसा लग रहा था मानो किसी की मौत हो गई है जबकि आम दिनों में रातों को राह बस्ती गुलज़ार रहती है...तबले की थाप और घुंघरूओं की आवाज़ किसी-किसी घर से गूंज उठती है और पूरी बस्ती रोशनी में नहा रहती है...रात जैसे-जैसे जवान होती है बस्ती की रौनक़ और बढ़ जाती है..... पाऊडर... खुश्बू... लाली...-लिपिस्टक और तरह-तरह के मेकअप लगा कर खड़ी लड़कियां आने-जाने वालों को लुभाने की हर मुमकिन कोशिश करती हैं...रोशनियों में अपने जीवन की कालिख को छुपातीं लड़कियां ग्राहकों को खुश करने में किसी तरह की कंजूसी नहीं करतीं... आखिर उनका धंधा ठहरा..। लेकिन बस्ती में आज अंधेरा है और घरों के दरवाजे बंद है....बस्ती के एक घर में एक लड़के ने जन्म लिया है।